आचार की पृष्ठभूमि

आधुनिक तकनीक में कुछ भी जानकारी ढूंढ़ने के लिए उसका सबसे विश्वसनीय स्रोत गूगल ही माना जाता है । पर एक प्रश्न ऐसा है जिसका उत्तर तथाकथित गूगल देव भी नहीं दे पाता है । वह स्वयं में स्वयं को ढूंढना है । अंतर की गहराइयों तक पहुंचना यह कतई गूगल के कर्मक्षेत्र में नहीं है । इसके लिए तो स्वयं को ही स्वयं के अंतर के कुरुक्षेत्र में उतरना पड़ेगा। संभवत: इसके सिवाय गूगल बाकी के सभी प्रश्नों के उत्तर प्राय: दे देगा।

व्यक्ति सदाचार के पथ पर चलता है । वह उच्च आचार का पालन करता हैं । वह साधु के दृष्टिकोंण से आचार का पालन हो सकता हैं । श्रावकत्व के रूप में भी आचार फलित हो सकता हैं । और सामान्य व्यक्ति भी अणुव्रत आचार संहिता आदि को मानकर अथवा अपने ढंग से सदाचार का पालन कर सकता हैं ।यहां प्रश्न हैं कि आचार की पृष्ठभूमि क्या हैं ? किस भूमिका के आधार पर आचार का पालन हो सकता हैं ? आगम वाणी से हम एक आधार प्राप्त कर सकतें हैं की चारित्र, समयक्त्व विहीन नहीं हो सकता हैं । वह यदि समयक्त्व नहीं है तो सम्यक् आचार और सम्यक् चारित्र हो नहीं सकता हैं । परन्तु चारित्र के बिना समयक्त्व स्वतंत्र रूप में हो सकता हैं । समयक्त्व और चारित्र एक साथ भी हो सकते हैं अथवा पहले सम्यक्त्व और बाद में भी चारित्र हो सकता हैं । सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, आचार की पृष्ठभूमि मानी जा सकती हैं । भेष-भूषा साधु की हो तथा ज्ञान निष्ठा व आचार भी हो तो सबका साथ हो सकता है नदी के दो किनारे व इस पार से उस पार जाने के लिए बीच में सेतु हैं यह अध्यात्म का सेतु है, ज्ञान, दर्शन व चारित्र में आस्था आदि - आदि । हमारे को जानकारी होना एक बात है लेकिन आचरण में लाने के लिए उस पर हमारी आस्था का होना नितांत आवश्यक है आचार की स्थिति बनाने के लिए ज्ञान व दर्शन दोनों हों हमने जान लिया महावर्तों के महत्व को पर ज्ञान को आचरण में लाने के लिए विचार-संस्कार हमारे गहरे होने की अपेक्षा भी होती है व आस्था का अडिग होना भी जरूरी है जहां संशय की स्थिति हो वहां काम पूरा नहीं होता हैं । हम हवा बंद और मंद होने के अंतर को समझें भाषा हमारी निश्चयात्मक न हो, हमारा लेखन या और भी प्रामाणिकता से रत हो । सामान्य तौर पर हम देखें तो व्यक्ति का जैसा विचार होता हैं उसी के अनुरूप ही व्यक्ति का आचार भी बन सकता हैं । ज्ञान को आचार तक लाने के लिए दर्शन रूपी सेतु की आवश्यकता होती हैं । पहले व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता हैं फिर जब सीखे हुए ज्ञान पर आस्था और श्रद्धा होती हैं तब वह बात आचार में परिणित हो जाती हैं ।

दूसरे शब्दों में विचार, संस्कार और आचार । पहले विचार होता हैं जब विचार गहरा हो जाता हैं तो वह संस्कार बन जाता हैं । वह आचार के रूप में परिणित हो जाता हैं । अत: सम्यक् ज्ञान और सम्यक् दर्शन को आचार की पृष्ठभूमि के रूप में देखा जा सकता हैं । व्यक्ति का व्यवहार प्रामाणिक होना चाहिए । कोई भी बात बताती हो तो उसका प्रमाण पास में होना चाहिए । बिना पुष्ट जानकारी के कोई भी बात नहीं कहनी चाहिए । वचन में प्रामाणिकता पर सूक्ष्मता से ध्यान देने का प्रयास करना चाहिए , कि कोई भी मिथ्या बात हमारे मुहं से न निकलें । इसलिए व्यक्ति का व्यवहार भी प्रामाणिकता से पूर्ण होना चाहिए । अधिकांश लोगों का मन यह अमूल्य धन-माया में यूं ही जाया कर देता है । वह या तो अतीत की गलियों में भटकता रहता है । या फिर भविष्य की असंभव सी परिकल्पनाओं में खोया रहता हैं । इस अंतर के भटकाव में बेशकीमती वर्तमान काल पीछे छूट जाता है । जिसमें , इतिहास गवाह है कितने महान लोगों ने नूतन कार्य कर बड़े-बड़े कमाल दिखाया हैं । वह वर्तमान क्षण ही है जिसे पकड़ कर जो सदुपयोग कर लेता है, वही अपने समय का स्वामी बन जाता है । वह भगवान् महावीर आदि की तरह आचार की पृष्ठभूमि सफलतम श्रेणी में आरूढ़ हो जाता हैं । आचार की पृष्ठभूमि में सम्यक् ज्ञान व सम्यक् दर्शन पुष्ट रहें तो आचार भी सम्यक् हो सकता हैं । कर्मों के क्षय के लिए आदमी को इस शरीर को धारण करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए इस शरीर को टिकाए रखने का प्रयास होना चाहिए अर्थात् जीवन जीने का हमारा परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति होता है । यूनान के सुप्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात और उसके शिष्य अरस्तू को पश्चिमी दार्शनिक के रूप में सम्मान के साथ देखा जाता है। वह जो महान होते है वे हर बात से शिक्षा लेते है, बच्चे को भी गुरु बना लेते है और जो भी कहीं अच्छी बात होती है उसे आत्मसात भी कर लेते है। अचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के कथन मुझे याद आ जाते है कि ज्ञात का जगत बहुत छोटा है वह अज्ञात का जगत बहुत बड़ा है । और यह एक वाक्य कभी भी अहंकार को आने नही देता हैं । गोत्र कर्म के बन्ध में 8 प्रकार के मद की चर्चा की गई है उसमे एक मद ज्ञान को, श्रुत को भी माना है। सुकरात के उत्तरार्द्ध को एक घटना प्रसंग सुनने को मिलता है, पता नही यह वास्तविक है या रूपक की भाषा मे व्यक्त हुआ है पर यह बड़ा मार्मिक है । कहते है आकाशवाणी हुई कि सुकरात सबसे ज्ञानी व्यक्ति है। लोगो ने आकर सुकरात को बताया तो उसने कहा कि जाकर कह दो सुकरात तो सबसे बड़ा अज्ञानी है। कहते है फिर पुन: और आकाशवाणी हुई कि जो अपने अज्ञान को जानता है वही सबसे बड़ा ज्ञानी है। आचार्य श्री भिक्षु आदि जैसे महान व्यक्ति को सहन भी बहुत करना पड़ता है। सुकरात अपने जीवन में युवाओं को नई दिशा दिखाने चाहते थे पर नियति को उनका बलिदान मंजूर था और उनको विष का प्याला पीकर मृत्यु दंड को स्वीकार करना पड़ा। चारित्रात्माएं जो घर-परिवार को त्यागकर संयम को स्वीकार करते हैं। संयोग से विप्रमुक्त हो जाते हैं। उनके लिए सांसारिक संबंध समाप्त हो जाते है। साधु के मालिकाना में कोई बैंक बैलेंस आदि नहीं होता हैं । संयोगों से मुक्त और भिक्षु के रूप में साधु रहते हैं। कर्मों से मुक्त रहने के लिए साधु साधना करता है। संक्षेप में कहा जाए तो पांच महाव्रत, पांच समितियां और तीन गुप्तियों की साधना करने वाला साधु अपने पूर्वकृत कर्मों से मुक्त होने का प्रयास करता है। साधुपन का पालन भी अखण्ड रूप में होता है। साधु के लिए समितियां, गुप्तियां आदि - आदि साधना की दृष्टि से बहुत आवश्यक होती हैं। वह हम सभी जीवन में अपने-अपने हिसाब से धर्म के नियम और आचार के प्रति जागरूक रहने का प्रयास करते रहें।

▶ प्रदीप छाजेड़,
(बोरावड़)

पश्चिम एशिया में अंतर्राष्ट्रीय कूटनीतिक बदलाव के संकेत

▶ राज कुमार सिन्हा

अमेरिका- ईरान के बीच हुए सीजफायर समझौता खत्म होने के बाद ईरान की रणनीति आक्रामक और सख्त जवाबी कार्यवाही करने पर केंद्रित हो गई है। ईरान स्पष्ट कर चुका है कि वह दबाव के आगे नहीं झुकेगा और अमेरिकी हमलों या प्रतिबंधों का पूरी ताकत से जवाब देगा।यदि अमेरिका प्रतिबंधों को और कड़ा करता है या सैन्य कार्रवाई बढ़ाता है, तो ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम को आक्रामक तरीके से फिर से तेज कर सकता है।

ईरान युद्ध शुरू होने से पहले अमेरिका और इजराइल की रणनीति का एक उद्देश्य सर्वोच्च नेता अली खामनेई की हत्या के बाद ईरान में सत्ता विरोधी जनविद्रोह भड़काना था, जो पूरी तरह विफल हो गई। बल्कि कई मामलों में इसका उल्टा प्रभाव देखने को मिला है। ईरान में शोक कार्यक्रमों के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा ईरान के साथ शांति समझौता समाप्त घोषित किए जाने के बाद, अमेरिका ने क्रेशम द्वीप, सिरिक, बंदर अब्बास और चाबहार समेत कई ईरानी ठिकानों को निशाना बनाया है। जून में हुए संघर्ष विराम समझौते के टूटने के बाद से यह विवाद फिर से गहरा गया है। जवाबी कार्यवाही में ईरान ने बहरीन, कतर और कुवैत स्थित अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर ड्रोन और मिसाइलों से हमले किए हैं। इसके अलावा ईरान ने बुशहर के पास अमेरिका का एक ड्रोन (एमक्यू-9) मार गिराने का दावा किया है।

अमेरिका और ईरान के बीच चल रहे ताजा युद्ध का मुख्य कारण होर्मुज जलडमरूमध्य के नियंत्रण, तेल आपूर्ति मार्गों और क्षेत्र में सामरिक वर्चस्व को लेकर उपजा प्रत्यक्ष सैन्य टकराव है। जून में हुए संघर्ष विराम समझौते के टूटने के बाद से यह विवाद फिर से गहरा गया है। ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड्स ने होर्मुज जलमार्ग से गुजरने वाले वाणिज्यिक तेल टैंकरों को निशाना बनाया है। ईरान इन जहाजों पर अपने नियम-कायदे लागू करना चाहता है। ईरान इस समुद्री मार्ग पर अपना एकाधिकार चाहता है, जबकि अमेरिका इसे एक खुला अंतर्राष्ट्रीय जलमार्ग बनाए रखने के लिए युद्ध के पहले वाली स्थिति बहाल करना चाहता है। ईरान की सेना 'रिवॉल्यूशनरी गार्ड्स' ने होर्मुज को बंद करने का एलान कर दिया है। उन्होंने सख्त चेतावनी दी है कि कोई भी जहाज उनकी मंजूरी के बिना इस रास्ते को पार करने की कोशिश न करे। कतर - जार्डन ने अमेरिका और ईरान दोनों देशों से समझौते का पालन करने और बातचीत जारी रखने की अपील की है। साथ ही होर्मुज स्ट्रेट में जहाजों की सुरक्षित आवाजाही बनाए रखने पर जोर दिया है।अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी ने कहा है कि अमेरिका-ईरान तनाव बढ़ा तो वैश्विक तेल आपूर्ति प्रभावित हो सकती है और ऊर्जा संकट लंबा खिंच सकता है। ?

अमेरिका-ईरान संघर्ष और ईरान के नेतृत्व परिवर्तन के बाद पश्चिम एशिया की कूटनीति एक नए संक्रमणकाल में प्रवेश करती दिखाई दे रही है। पश्चिम एशिया में अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनाव और युद्ध के खतरे के बीच, रूस ने अपना बेहद उन्नत टीयू -214 पीयू एयरबोर्न कमांड विमान तेहरान भेजा है। इस कमांड विमान को तेहरान भेजकर रूस ने अमेरिका और अन्य पश्चिमी ताकतों को एक कड़ा भू-राजनीतिक संदेश दिया है कि वह संकट के समय में ईरान के साथ मजबूती से खड़ा है। अब यह क्षेत्र केवल सैन्य टकराव का मैदान नहीं रह गया है, बल्कि वैश्विक महाशक्तियों के बीच रणनीतिक प्रतिस्पर्धा, ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री व्यापार मार्गों और नई भू-राजनीतिक साझेदारियों का केंद्र बन गया है। आने वाले वर्षों में क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की दिशा पर इस संघर्ष का गहरा प्रभाव पड़ सकता है। अमेरिका की 'अधिकतम दबाव' नीति और ईरान की 'प्रतिरोध रणनीति' के बीच जारी टकराव ने यह स्पष्ट कर दिया है कि केवल सैन्य शक्ति के आधार पर स्थायी राजनीतिक समाधान संभव नहीं है। इससे क्षेत्रीय देशों ने बहुध्रुवीय कूटनीति को अधिक महत्व देना शुरू किया है। अब अधिकांश देश एक ही शक्ति पर निर्भर रहने के बजाय अमेरिका, चीन, रूस, यूरोपीय देशों और क्षेत्रीय शक्तियों के साथ समानांतर संबंध विकसित करने की नीति अपना रहे हैं। सऊदी अरब, यूएई, कतर और अन्य देशों ने केवल अमेरिका पर निर्भर रहने के बजाय चीन, रूस और क्षेत्रीय शक्तियों के साथ भी रणनीतिक संबंध मजबूत करने की नीति अपनाई है। साथ ही वे ईरान के साथ संवाद बनाए रखने की भी कोशिश कर रहे हैं ताकि सीधे टकराव से बचा जा सके। चीन की मध्यस्थता में ईरान और सऊदी अरब के बीच संबंधों की बहाली तथा रूस-ईरान के बढ़ते रणनीतिक सहयोग ने यह संकेत दिया है कि पश्चिम एशिया में अमेरिकी प्रभाव को पहली बार गंभीर वैकल्पिक चुनौती मिल रही है। चीन अपनी ऊर्जा सुरक्षा, बेल्ट एंड रोड पहल और निवेश के माध्यम से क्षेत्र में दीर्घकालिक आर्थिक प्रभाव बढ़ाना चाहता है, जबकि रूस सुरक्षा, रक्षा सहयोग और ऊर्जा समन्वय के जरिए अपनी भूमिका मजबूत कर रहा है। चीन, रूस और ब्रिक्स के विस्तार के संदर्भ में ईरान की बदलती विदेश नीति, स्थानीय मुद्राओं में व्यापार, ऊर्जा सहयोग तथा पश्चिम प्रतिबंधों का विकल्प की दिशा में आगे बढने पर गंभीरता से विचार किया जा रहा है। अमेरिका-ईरान युद्ध के बीच भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए दोनों पक्षों के साथ संतुलन साध रहा है। इस युद्ध ने भारत की ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता और कूटनीतिक संबंधों के सामने एक बड़ी चुनौती खड़ी कर दी है। भारत के दृष्टिकोण से चाबहार बंदरगाह, अंतर्राष्ट्रीय उत्तर- दक्षिण परिवहन गलियारा, ऊर्जा सुरक्षा, भारतीय प्रवासी समुदाय और संतुलित विदेश नीति की चुनौती होगी। भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा पश्चिम एशिया से पूरा होता है तथा उसके व्यापारिक हित होर्मुज जलडमरूमध्य और अरब सागर के समुद्री मार्गों से जुड़े हुए हैं। इसलिए भारत को अपनी पारंपरिक 'रणनीतिक स्वायत्तता' की नीति के अनुरूप अमेरिका, ईरान, इजराइल और खाड़ी देशों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखने की चुनौती और अधिक जटिल होती दिखाई दे रही है। इससे पश्चिम एशिया में शक्ति संतुलन पहले की तुलना में अधिक जटिल और बहुध्रुवीय होता जा रहा है। यूरोपीय देशों के सामने भी नई चुनौती खड़ी हुई है। एक ओर वे अमेरिका के सुरक्षा सहयोगी बने रहना चाहते हैं, वहीं दूसरी ओर ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री व्यापार और क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने के लिए ईरान तथा खाड़ी देशों के साथ संवाद बनाए रखने की आवश्यकता भी महसूस कर रहे हैं। इससे यूरोपीय कूटनीति में भी अधिक व्यावहारिक और संतुलित दृष्टिकोण उभर सकता है। भारत सहित एशिया के अनेक देशों के लिए भी यह परिवर्तन अत्यंत महत्वपूर्ण है। भविष्य में पश्चिम एशिया की राजनीति केवल सैन्य शक्ति से निर्धारित नहीं होगी, बल्कि ऊर्जा आपूर्ति, समुद्री मार्गों की सुरक्षा, आर्थिक प्रतिबंधों, प्रौद्योगिकी सहयोग, साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित रक्षा प्रणालियों और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं पर नियंत्रण जैसे नए कारक भी कूटनीतिक निर्णयों के प्रमुख आधार बनेंगे। इसलिए यह संघर्ष केवल दो देशों के बीच का विवाद नहीं, बल्कि बदलती विश्व व्यवस्था और बहुध्रुवीय अंतरराष्ट्रीय राजनीति के निर्माण की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में देखा जा रहा है। अमेरिका-ईरान संघर्ष, ईरान के नेतृत्व परिवर्तन और उसके बाद विकसित घटनाक्रम ने यह स्पष्ट कर दिया है कि पश्चिम एशिया अब एक नए भू-राजनीतिक दौर में प्रवेश कर चुका है। सैन्य शक्ति, वैचारिक संघर्ष, ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री व्यापार मार्गों और वैश्विक महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा अब एक-दूसरे से गहराई से जुड़ चुकी है। ईरान ने अपने नेतृत्व परिवर्तन को राजनीतिक स्थिरता और राष्ट्रीय एकजुटता के प्रदर्शन में बदलने का प्रयास किया है, जबकि अमेरिका और उसके सहयोगियों के सामने क्षेत्रीय प्रभाव बनाए रखने की चुनौती पहले से अधिक कठिन हो गई है। दूसरी ओर खाड़ी देशों, यूरोप तथा एशिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं ने यह महसूस किया है कि बदलती विश्व व्यवस्था में केवल एक महाशक्ति पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं होगा। इसी कारण बहुपक्षीय कूटनीति, क्षेत्रीय संवाद और रणनीतिक संतुलन की नई प्रवृत्तियां तेजी से उभर रही हैं। आने वाले समय में पश्चिम एशिया की स्थिरता इस बात पर निर्भर करेगी कि प्रतिस्पर्धा और टकराव के बीच संवाद, कूटनीति और पारस्परिक सुरक्षा व्यवस्था को कितना महत्व दिया जाता है।उपरोक्त संदर्भ में वर्तमान परिस्थितियां यह भी संकेत देती हैं कि पश्चिम एशिया धीरे-धीरे अमेरिकी एकध्रुवीय प्रभाव से निकलकर बहुध्रुवीय शक्ति-संतुलन की ओर बढ़ रहा है। चीन का आर्थिक निवेश और मध्यस्थता, रूस का रक्षा एवं सामरिक सहयोग तथा खाड़ी देश क्षेत्रीय संतुलन की राजनीति के माध्यम से नई भूमिका निभा रहे हैं। इससे स्पष्ट है कि भविष्य की कूटनीति केवल सैन्य गठबंधनों पर आधारित नहीं होगी, बल्कि ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री व्यापार मार्ग, निवेश, प्रौद्योगिकी और क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग भी शक्ति-संतुलन के महत्वपूर्ण आधार बनेंगे। यथार्थवादी दृष्टिकोण से निष्कर्ष यह निकलता है कि अमेरिका, ईरान, इजराइल और खाड़ी देशों की वर्तमान नीतियां किसी वैचारिक टकराव से अधिक अपनी-अपनी सुरक्षा, शक्ति और रणनीतिक हितों की रक्षा तथा क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन को अपने पक्ष में बनाए रखने की कोशिश हैं। यही प्रतिस्पर्धा आने वाले वर्षों में पश्चिम एशिया की राजनीति, सुरक्षा व्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति की दिशा तय करेगी। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो यह संघर्ष केवल क्षेत्रीय संकट तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वैश्विक ऊर्जा बाजार, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, समुद्री सुरक्षा और विश्व अर्थव्यवस्था पर भी दूरगामी प्रभाव डाल सकता है।

आप सच में मेरे पापा हो

▶ नरेन्द्र नन्द
राधिका नगर
धमतरी, छत्तीसगढ़

एक समय एक पिता जी अपने बड़े बेटे के साथ खिलौने के दुकान से विविध खिलौने लेकर जा रहे थे । जिस रास्ते से जा रहे थे । उस रास्ते वह दोनों दुकान से पार्किंग तक पैदल ही जा रहे थे । उस रास्ते के किनारे मेन एक मोटर साइकिल के सीट पर एग ट्रे मे एक ट्रे अंडा रखा हुआ था जिसे घर ले जाने के लिए एक दूसरे आदमी ने खरीद कर लाया था और कोई सामान याद आया तो वैसे ही छोडकर चले गये थे ।

इसी बीच वह पिता जी उसके बेटे बहुत जल्दी मेन जा रहे थे तब अचानक से हाथ लगने से वह एग ट्रे जमीन पर गिर गया । इसे आसपास के कोई आदमी नहीं देखे उसके बेटे जरूर देख रहे थे । इसी बीच एक आदमी उस रास्ते से साइकिल में जाते समय उसने देख लिया उस पिता जी को कहने लगा अरे कोई बात नहीं अंकल कोई नहीं देख रहा चलते बनो । पर उस पिता जी ने अपने बेटे को लेकर बाजू के एक दुकान के सामने बैठ गये । उसके बेटा बार- बार अपने पिता जी को पुछते - पिता जी हम लोग घर जाने छोड़ यहाँ क्यों बैठ गये हैं ? तब उसने उन्हे कोई जवाब नहीं दिये ।

थोड़ी देर में वह व्यक्ति आ गया जिनका अंडा गिर कर टूट गया था । उन्हे देख वह पिता जी अपने बेटे के जल्दी से उसके पास पहुँच गए । वह आदमी करीब आते ही देखा कि उसके सारे अंडे टूटकर जमीन में गिर गया हैं । उसके कुछ बोलने से पहले वह पिता जी दोनों हाथ जोड़कर बोलने लगे हम पंद्रह मिनट से इंतजार कर रहे थे कि किनका अंडा हैं जो मेरे हाथ लगने से टूटा हैं । तो हम इसके बदले आपको पैसा देने के लिए यहाँ रुक कर आपका इंतजार कर रहे थे । और अपने पैकेट से पाँच सौ का नोट थमाते हुये बोले - लिजिये भाई साहब आपके

अंडे के पैसे जो हमारे गलती से टूट गया । जिस आदमी के मोटर साइकिल से अंडा टूटा था वह यह सब देख चकित हो रहा था । उसके मन से एक ई बात निकला - आप अभी तक पंद्रह मिनट से इंतजार क्यों कर रहे हैं ? आप चले जाते आपको देखने वाला तो कोई नहीं हैं ? तब उस पिता जी ने अपने बेटे कि ओर इशारा करते हुये कहा- साहब कोई देखे न देखे ये देखिये मेरे बेटे तो मेरे साथ हैं और इसने यह सब होते जरूर देखे हैं । और आप कह रहे हैं कोई नहीं देखे हैं । ऐसे कैसे चला जाऊंगा । इसलिए यहाँ आपका इंतजार कर रहा था । यह सुनकर वह आदमी दाङ होकर उस पिता जी और उस बेटे कि ओर देखने लगे और उसके हाथ के पैसे को उसी के जेब में रखते अपने जेब से पाँच सौ का और नोट निकालकर उस पिता को थमाते हुये बोलने लगे - आप महान हैं आपने मेरा भी आख खोल दिया कास हर पिता यह सोंचने लग जाय कि अगर हम ईमानदारी का कहानी सुनाने से अच्छा हैं ईमानदारी से प्रतिदिन हर काम को करते जाये तो हमारे बच्चे बिना किसी मार पीट के और बिना कोई नैतिक शिक्षा या संस्कार जैसे कुछ बात कहने के बजाय उन्हे नैतिक रूप से जी के दिखाये तो वह अपने आप सब कुछ सीख जाएँगे ।

दोनों एक दूसरे को धन्यवाद देते जा रहे थे तब रास्ते में उसके बेटे ने कहा पापा जी आपने ऐसे क्यों किया ? तब उसने कहा - बेटा अगर आज मैं अंडा को गिरा कर वहाँ से आपको जल्दी जल्दी भगा कर कहीं छुपा देता या अपना मोटर साइकिल निकाल कर चले जाते तो मेरा विश्वास हैं आप भी बड़े होकर एक बार भी यह नहीं सोंचते किकिसी का नुकसान करने से खुद का कुछ नहीं होगा भले दूसरे का नुकसान होने दे । तब बेटे ने कहा - पापा आप सच में मेरे पापा हो मैं आज के बाद कभी किसी का नुकसान नहीं करुंगा । दूसरे का हित हो ऐसे ही काम सदा करते रहूँगा । आपके सिर को कभी झुकने नहीं दूंगा ।

शब्दों और विचारों के कारतूस

▶ राजेंद्र बज

शब्दों और विचारों की बारूद से कलम की नोक पर ऐसे कारतूस तैयार किए जाते हैं जिसे कि मुख्य रूप से पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से दागा जाता हैं। जमाने के तमाम पढ़ने-लिखने वाले इसे व्यंग्य के रूप में पहचानते हैं। वैसे तो काल्पनिक आधार पर भी ऐसी रचना तैयार हो जाती है, लेकिन कभी-कभी खरी-खरी बात कह देना / लिख देना भी व्यंग्य का सृजन कर देता है। यूं तो अखबार में तमाम तरह की पठनीय सामग्री हुआ करती है, लेकिन हर एक सामग्री को हर कोई पूरी तरह पढ़ लेवे, यह जरूरी नहीं होता।

बावजूद इसके भांति-भांति की विसंगतियों से जूझने वाला पाठक वर्ग व्यंग्य पर निगाहें केंद्रित कर ही देता है। जिस पर निशाना साधा जाता है - वह कसमसा कर रह जाया करता है। कभी-कभी कोई बात तीर की तरह चुभने पर अपने आने वाले समय का इंतजार किया करता है। इस बीच जिसका न उधों से लेना होता है और न ही माधो को देना होता है, वह वर्ग मन ही मन व्यंग्य का मजा ले लिया करता है। यह सिलसिला निर्बाध गति से चलता आ रहा था। लेकिन न जाने किसकी नजर लग गई जो कुछ एक अखबारों से इसे टरका दिया गया। खैर।

नतीजा यह निकला कि कुछ एक ने तो व्यंग्य से तौबा कर ली। लेकिन जिस प्रकार किसी दुकान में बिकने के लिए माल होता है, लेकिन माल के साथ जो कुछ उसमें चल-अचल संपत्ति नुमा सामान होता है, वह कतई बेचने का नहीं होता। यानी कि माल तो बिकाऊ होता है, लेकिन अन्य साजो-सामान बेचने का नहीं होता है। ऐसा ही कुछ छपने-छपाने के छापखानों के प्रबंधन ने किया होगा। वैसे यह बात अटकल के रूप में कही गई है लेकिन जरूरी नहीं कि हर अटकल अटल सत्य ही हो। खैर जाने दो, बात निकलेगी तो फिर दूर तलक जाएगी।

बहरहाल, खरी-खरी कहने वाला दुनिया को खटक सकता है। लेकिन यदि खरी-खरी बात व्यंग्य के माध्यम से कही गई हो, तो उस स्तंभ का मान रखते हुए हर कोई हल्की सी मुस्कुराहट बिखेर देता है। व्यंग्य को पढ़ते हुए पाठक का मुस्कुराना इस बात का द्योतक है कि वह व्यंग्य नहीं अपितु अपने अंतर्मन की इबारत को पढ़ रहा होता है। अब रहा सवाल व्यंग्यकार का, तो वह तो अपने मन की भड़ास निकाल कर असीम आनंद की दिव्य अनुभूति कर रहा होता है।

कहते हैं कि मन की बात मन में नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि वह ग्रंथि बन कर दिमागी संतुलन पर हमला कर देती है। इसलिए जो होना चाहिए वह नहीं हो रहा होता है, तो कागज कलम थामकर मन के गुबार को उड़ेल दिया जाता है। और किसी का तो नहीं पता, लेकिन जहां तक मेरी बात है, तो हां, यह मेरे मन की बात है। ..... और मन का क्या है, वह तो होता ही चंचल है - बिना बात के भी बात का बतंगड़ बनाना तो उसकी स्वाभाविक मनोवृति हुआ करती है। कुल मिलाकर सच मानो तो मानो, लेकिन मैंने तो यह सब लिखकर हवा में तीर चलाए हैं।

वैसे कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कुछ परिस्थितियां ऐसी निर्मित हो जाया करती है कि हम कहना चाहते हैं, लेकिन कह नहीं पाते। कोई बात हमारी सहनशक्ति के बाहर चली जाती है, लेकिन हम उसका प्रतिकार नहीं कर पाते। ऐसी स्थिति में मन की भड़ास को उकेरने पर देखते ही देखते ऐसी रचना तैयार हो जाती है जो कि ऐसे ही किसी स्तंभ में स्थान पा जाती है।